

संघवाद

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» संघवाद का अर्थ और उसका आधार

प्रश्न 1 (आसान). संघवाद में सरकार के कितने स्तर होते हैं?

उत्तर – दो या अधिक स्तर

प्रश्न 2 (आसान). क्या एकात्मक शासन में भी राज्य सरकारों के पास अपनी शक्तियां होती हैं?

उत्तर – नहीं, एकात्मक में सारी शक्ति केंद्र के पास होती है।

प्रश्न 3 (मध्यम). भारत में संघीय व्यवस्था का एक उदाहरण दीजिए, जिसमें केंद्र और राज्य के काम बंटे हों।

उत्तर – केंद्र सरकार रक्षा का काम देखती है, जबकि राज्य सरकारें शिक्षा और पुलिस व्यवस्था संभालती हैं।

प्रश्न 4 (कठिन). अगर किसी देश में एक ही भाषा और संस्कृति के लोग रहते हों, तो क्या वहां संघीय व्यवस्था ज़रूरी है? अपने उत्तर का कारण बताएं।

उत्तर – ज़रूरी नहीं है। अगर विविधता कम हो, तो एकात्मक शासन भी चल सकता है, क्योंकि वहां शक्तियों के बंटवारे की उतनी ज़रूरत नहीं पड़ती। लेकिन संघीय व्यवस्था से 'regional diversity' का सम्मान होता है।

» संघीय बनाम एकात्मक शासन: संरचना और स्वतंत्रता

प्रश्न 5 (आसान). एकात्मक शासन में केंद्र किस प्रकार का संबंध रखता है?

उत्तर – वह प्रांत/राज्य जैसी इकाइयों को आदेश देकर अधीन चला सकता है, इसलिए संबंध “अधीनता” वाला होता है।

प्रश्न 6 (आसान). ‘अधिकार-क्षेत्र’ का अर्थ क्या है?

उत्तर – वैधानिक अधिकार का तय दायरा—जो भौगोलिक सीमा और/या विषयों के रूप में हो सकता है।

प्रश्न 7 (मध्यम). संघीय शासन में केंद्र सीधे आदेश देकर राज्य को अधीन क्यों नहीं रखता?

उत्तर – क्योंकि संविधान केंद्र और राज्यों के अधिकार-क्षेत्र अलग-अलग तय करता है; राज्य अपने अधिकार-क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से काम करता है।

प्रश्न 8 (कठिन). समवर्ती सूची (जैसे शिक्षा) के मामले में केंद्र और राज्य के कानून टकरा जाएँ तो सामान्य नियम क्या होगा?

उत्तर – सामान्य तौर पर केंद्र सरकार द्वारा बनाया गया कानून मान्य होता है।

» संघीय व्यवस्था की कामकाजी शर्तें (सहमति और भरोसा)

प्रश्न 9 (आसान). संघीय व्यवस्था के प्रभावी संचालन के लिए कौन-सी दो कामकाजी शर्तें ज़रूरी हैं?

उत्तर – सत्ता-विभाजन के नियमों पर सहमति और एक-दूसरे पर भरोसा।

प्रश्न 10 (आसान). ‘आदर्श संघीय व्यवस्था’ में किन दो पक्षों की बात होती है?

उत्तर – आपसी भरोसा और साथ रहने पर सहमति।

प्रश्न 11 (मध्यम). यदि केंद्र बार-बार राज्य के अधिकार-क्षेत्र में हस्तक्षेप करे, तो इससे सबसे पहले किस शर्त को चोट लगती है?

उत्तर – सत्ता-विभाजन के नियमों पर सहमति को।

प्रश्न 12 (कठिन). किसी संघीय देश में विवाद तो होते हैं, लेकिन अदालत और संविधान की प्रक्रियाएँ मानकर समाधान निकाला जाता है। क्या यह स्थिति संघीय व्यवस्था के 'कामकाज' को मजबूत मानेगी या कमजोर? कारण बताओ।

उत्तर – मजबूत—क्योंकि नियमों (संविधान की प्रक्रियाएँ) मानने की सहमति है और समाधान के लिए भरोसा/मान्यता बनी रहती है।

» संघीय गठन के दो तरीके

प्रश्न 13 (आसान). संघीय व्यवस्था बनने का पहला तरीका क्या है?

उत्तर – पहले से स्वतंत्र राज्यों/देशों का मिलकर संघ बनाना।

प्रश्न 14 (आसान). संघीय व्यवस्था बनने का दूसरा तरीका क्या है?

उत्तर – बड़े देश में विविधता के आधार पर राज्यों का गठन कर केंद्र-राज्य के बीच सत्ता बाँटना।

प्रश्न 15 (मध्यम). किस कारण से अलग-अलग संघों में शक्ति-संतुलन समान नहीं रहता?

उत्तर – क्योंकि संघीय व्यवस्था के गठन का तरीका अलग-अलग होता है—कहीं स्वतंत्र इकाइयाँ मिलती हैं, कहीं राज्यों का गठन केंद्र की तरफ से होता है।

प्रश्न 16 (कठिन). अगर किसी संघ के गठन में प्रांतों/राज्यों के अधिकार तुलनात्मक रूप से मजबूत हों, तो यह किस प्रकार के गठन की ओर संकेत करता है?

उत्तर – यह अधिकतर पहले तरीके की ओर संकेत करता है जहाँ स्वतंत्र राष्ट्र/राज्य मिलकर संघ बनाते हैं।

» भारत में केंद्र-राज्य सत्ता-विभाजन: तीन सूचियाँ

प्रश्न 17 (आसान). पुलिस और कृषि किस सूची के विषय हैं?

उत्तर – राज्य सूची (State List)

प्रश्न 18 (आसान). रक्षा और विदेश मामले किस सूची में आते हैं?

उत्तर – संघ सूची (Union List)

प्रश्न 19 (मध्यम). अगर कोई नया विषय (जैसे साइबर सुरक्षा) सामने आता है, जो किसी भी सूची में नहीं है, तो उस पर कानून बनाने का अधिकार किसके पास होगा?

उत्तर – केंद्र सरकार के पास, क्योंकि ये 'अवशिष्ट विषय' (Residuary Subjects) कहलाते हैं।

प्रश्न 20 (कठिन). यदि झारखंड सरकार वनों के संरक्षण पर एक कानून बनाती है और केंद्र सरकार भी इसी विषय पर एक कानून बनाती है जिसमें कुछ प्रावधान झारखंड के कानून से अलग हैं, तो कौन सा कानून प्रभावी होगा और क्यों?

उत्तर – केंद्र सरकार का कानून प्रभावी होगा। ऐसा इसलिए क्योंकि 'वन' समवर्ती सूची का विषय है, और समवर्ती सूची में केंद्र और राज्य दोनों कानून बना सकते हैं, लेकिन टकराव की स्थिति में केंद्र का कानून मान्य होता है।

» संघीय व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ

प्रश्न 21 (आसान). संघीय व्यवस्था में सरकार के कितने स्तर होते हैं?

उत्तर – दो या अधिक स्तर (जैसे केंद्र और राज्य; जरूरत पर तीसरा स्तर भी)।

प्रश्न 22 (आसान). अलग-अलग स्तर की सरकारों के लिए अधिकार-क्षेत्र कहाँ स्पष्ट होते हैं?

उत्तर – संविधान में।

प्रश्न 23 (मध्यम). संविधान के मौलिक प्रावधानों में बदलाव कोई एक स्तर अकेले क्यों नहीं कर सकता?

उत्तर – क्योंकि ऐसे बदलाव दोनों स्तरों की सहमति से ही हो सकते हैं।

प्रश्न 24 (मध्यम). अधिकारों के विवाद की स्थिति में फैसला कौन करता है?

उत्तर – अदालतें व्याख्या करती हैं; सर्वोच्च न्यायालय निर्णायक भूमिका निभाता है।

प्रश्न 25 (कठिन). वित्तीय स्वायत्तता सुनिश्चित करने के लिए संविधान ने क्या व्यवस्था की है?

उत्तर – केंद्र और राज्य/विभिन्न स्तरों के लिए राजस्व के अलग-अलग स्रोत निर्धारित किए हैं।

» केंद्र-राज्य संबंध: स्वायत्तता और सहयोग की वास्तविकता

प्रश्न 26 (आसान). संघीय भावना मजबूत करने के लिए केंद्र-राज्य संबंधों में कौन-सी दो चीजें साथ चलनी चाहिए?

उत्तर – स्वायत्तता और सहयोग

प्रश्न 27 (आसान). स्वायत्तता का मतलब क्या है?

उत्तर – राज्य के अधिकार-क्षेत्र में निर्णय की स्वतंत्रता

प्रश्न 28 (मध्यम). अगर केंद्र की नीतियाँ लगातार राज्यों के अधिकार-क्षेत्र में दखल देने लगे, तो संघीय भावना पर क्या असर होगा?

उत्तर – स्वायत्तता कमजोर होगी और संघीय भावना कमजोर पड़ सकती है

प्रश्न 29 (मध्यम). शासन दल/गठबंधन/बहुमत में बदलाव होने पर केंद्र-राज्य संबंध क्यों बदल सकते हैं?

उत्तर – क्योंकि राजनीतिक माहौल भरोसा और समन्वय की संभावना तय करता है

प्रश्न 30 (कठिन). मान लो केंद्र और अधिकांश राज्य एक-दूसरे के राजनीतिक विरोधी हैं। फिर भी संघीय व्यवस्था टिके, इसके लिए सहयोग की संस्कृति कैसे जरूरी है?

उत्तर – क्योंकि विरोधी होने पर भी अधिकार-क्षेत्र का सम्मान, समन्वय और भरोसे के साथ काम करना जरूरी होता है; तभी विवाद बढ़कर स्वायत्तता को कुचलने नहीं देता।

» भाषायी राज्य और भाषावार पुनर्गठन

प्रश्न 31 (आसान). भाषावार पुनर्गठन का अर्थ क्या है?

उत्तर – राज्यों की सीमाओं को भाषा/आवश्यकताओं के आधार पर फिर से बाँटना।

प्रश्न 32 (आसान). केवल भाषा के अलावा किन बातों को भी ध्यान में रखा गया?

उत्तर – संस्कृति, भूगोल और एथनीसिटी/जातीय विविधता।

प्रश्न 33 (मध्यम). भाषायी राज्य संघीयता में भरोसा कैसे बढ़ा सकते हैं?

उत्तर – क्योंकि भाषा के अनुरूप प्रशासन जनता को समझ आता है, पहचान सम्मानित होती है और केंद्र-राज्य के संबंधों में सहयोग का माहौल बनता है।

प्रश्न 34 (कठिन). मान लो दो इलाकों की भाषा एक है लेकिन भूगोल और संस्कृति बहुत अलग है। फिर भी क्या सिर्फ भाषा के आधार पर पुनर्गठन सही होगा? क्यों?

उत्तर – हर मामले में नहीं। क्योंकि विकास, संचार और प्रशासनिक जरूरतें भूगोल से जुड़ी होती हैं और संस्कृति/सामाजिक ढांचे से भी जुड़ी होती हैं; इसलिए संतुलित निर्णय के लिए केवल भाषा नहीं बल्कि संस्कृति व भूगोल भी देखना पड़ता है।

» भाषा-नीति और अनुसूचित भाषाएँ

प्रश्न 35 (आसान). संविधान ने किसी एक भाषा को एकमात्र राष्ट्रभाषा का दर्जा क्यों नहीं दिया?

उत्तर – ताकि बहु-भाषाई सम्मान बना रहे और बाकी भाषाओं को भी संवैधानिक जगह मिल सके।

प्रश्न 36 (आसान). हिंदी को संविधान में किस रूप में मान्यता मिली है?

उत्तर – राजभाषा के रूप में।

प्रश्न 37 (मध्यम). अनुसूचित भाषाओं का दर्जा मिलने का मूल मतलब क्या होता है?

उत्तर – इन भाषाओं को सिर्फ बोलचाल तक सीमित न रखकर विकास/पहचान के लिए संवैधानिक मान्यता देना।

प्रश्न 38 (कठिन). केंद्र/राज्य की कामकाज भाषा व्यवस्था में 'लचीलापन' और अंग्रेजी के उपयोग को विवाद क्यों माना जा सकता है? 2 कारण लिखो।

उत्तर – 1) कुछ लोग मानते हैं अंग्रेजी का उपयोग जरूरत से ज्यादा हो रहा है, जिससे हिंदी/अन्य भाषाओं की भूमिका कम पड़ सकती है। 2) दूसरी तरफ कुछ लोग कहते हैं प्रशासनिक/तकनीकी कामों में अंग्रेजी की जरूरत से काम तेजी से/ठीक तरह से होता है—इस टकराव से विवाद बनता है।

» विकेंद्रीकरण: स्थानीय स्तर पर सत्ता की साझेदारी

प्रश्न 39 (आसान). विकेंद्रीकरण का मतलब क्या है?

उत्तर – केंद्र/राज्य से शक्तियाँ लेकर स्थानीय सरकारों को देना—यानी स्थानीय स्तर पर सत्ता की साझेदारी।

प्रश्न 40 (आसान). स्थानीय स्तर पर लोगों की प्रत्यक्ष भागीदारी क्यों बढ़ती है?

उत्तर – क्योंकि निर्णय स्थानीय स्तर पर होते हैं और लोग फैसलों में सीधे भागीदार बन पाते हैं।

प्रश्न 41 (मध्यम). पहले स्थानीय निकायों में विकेंद्रीकरण नाम मात्र क्यों रहा?

उत्तर – क्योंकि वे राज्य सरकार के सीधे नियंत्रण में थे, नियमित चुनाव नहीं होते थे और उनके पास अधिकार व संसाधन पर्याप्त नहीं थे।

प्रश्न 42 (कठिन). विकेंद्रीकरण के दो तर्क लिखो और समझाओ कि यह लोकतंत्र को कैसे मजबूत करता है।

उत्तर – तर्क 1: स्थानीय समस्याओं का निपटारा बेहतर तरीके से होता है क्योंकि लोगों को अपने इलाके की समझ होती है। तर्क 2: पैसा कहाँ खर्च हो और संसाधन कैसे कुशलता से उपयोग हों—स्थानीय निकाय बेहतर तय कर पाते हैं। लोकतंत्र इसलिए मजबूत होता है क्योंकि स्थानीय स्तर पर लोगों को फैसलों में सीधे भागीदार बनाया जाता है, चुनाव नियमित होते हैं और जवाबदेही बढ़ती है।

» 1992 के बाद स्थानीय स्वशासन की संवैधानिक व्यवस्था

प्रश्न 43 (आसान). स्थानीय निकायों के चुनाव किस तरह करवाने का संवैधानिक लक्ष्य रखा गया?

उत्तर – नियमित (regularly) चुनाव

प्रश्न 44 (आसान). 1992 के बाद स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए कम-से-कम कितना आरक्षण रखा गया?

उत्तर – कम-से-कम 1/3 (एक तिहाई)

प्रश्न 45 (मध्यम). आरक्षण (SC/ST/OBC) का उद्देश्य स्थानीय स्वशासन में क्या होता है?

उत्तर – पिछड़े/वंचित सामाजिक समूहों को प्रतिनिधित्व और निर्णयों में भागीदारी देना

प्रश्न 46 (कठिन). 'वास्तविक विकेंद्रीकरण' क्यों तभी मजबूत माना जाता है जब राज्यों से स्थानीय निकायों को अधिकार और राजस्व का कुछ भाग भी दिया जाए?

उत्तर – क्योंकि बिना अधिकार और संसाधन (राजस्व) के स्थानीय निकाय काम करने की क्षमता नहीं रखते; चुनाव/आरक्षण तो प्रतिनिधित्व देते हैं, पर वास्तविक निर्णय-विकास के लिए शक्तियाँ और पैसा जरूरी है

» स्थानीय शासन का ढाँचा: ग्राम से शहर तक

प्रश्न 47 (आसान). ग्राम स्तर पर स्थानीय शासन की सबसे शुरुआत किससे होती है?

उत्तर – ग्राम सभा/ग्राम पंचायत।

प्रश्न 48 (आसान). ग्रामीण ढाँचे में पंचायत समिति के ऊपर कौन-सा स्तर आता है?

उत्तर – जिला परिषद।

प्रश्न 49 (मध्यम). अगर शहर के विकास के लिए प्रशासनिक इकाई बनती है, तो वहाँ मुख्य शहरी निकाय कौन-से होते हैं?

उत्तर – नगरपालिका और नगर निगम (मेयर के साथ)।

प्रश्न 50 (कठिन). क्यों कहा जाता है कि स्थानीय शासन का ढाँचा 'सिर्फ गांव तक' सीमित नहीं है?

उत्तर – क्योंकि स्थानीय शासन ग्रामीण स्तर (ग्राम सभा/ग्राम पंचायत, पंचायत समिति, जिला परिषद) और शहरी स्तर (नगरपालिका/नगर निगम, मेयर) दोनों जगह चुनाव, भूमिकाएँ और लोगों की भागीदारी के जरिए काम करता है।

» **ब्राजील का उदाहरण: नागरिक सहभागिता से बजट-निर्णय**

प्रश्न 51 (आसान). ब्राजील के पोर्टो एलगे में नागरिक किस चीज़ में शामिल होते हैं?

उत्तर – उप-क्षेत्र और शहर से जुड़े मुद्दों के निर्णय में, खासकर बजट-निर्णय में।

प्रश्न 52 (आसान). नागरिक सहभागिता का एक असर क्या हो सकता है?

उत्तर – संसाधन-वितरण में समानता बढ़ना।

प्रश्न 53 (मध्यम). अगर बजट के फैसले सिर्फ ऊपर से हों, तो क्या जोखिम बढ़ता है?

उत्तर – जरूरत वाले क्षेत्रों की आवाज़ दब सकती है और संसाधन-वितरण केवल अमीर इलाकों तक सीमित हो सकता है।

प्रश्न 54 (कठिन). विकेंद्रीकरण और नागरिक सहभागिता मिलकर बजट-निर्णय को कैसे बेहतर बनाते हैं? 2 कारण लिखो।

उत्तर – 1) निर्णय प्रक्रिया में नागरिकों की आवाज़ आती है, जिससे जरूरतें सामने आती हैं। 2) उप-क्षेत्रों के मुद्दों पर ध्यान बढ़ता है, जिससे संसाधन-वितरण अधिक समान हो सकता है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लीजिए एक देश है 'अल्फा', जहां केंद्र सरकार और तीन राज्य सरकारें हैं: 'बीटा', 'गामा', और 'डेल्टा'। 'अल्फा' में संघीय शासन व्यवस्था कैसे काम करेगी?

› पहला कदम: 'अल्फा' का संविधान केंद्र सरकार और 'बीटा', 'गामा', 'डेल्टा' राज्यों की सरकारों के बीच शक्तियों का स्पष्ट बंटवारा करेगा।

› दूसरा कदम: केंद्र सरकार 'राष्ट्रीय महत्व' के मुद्दों, जैसे रक्षा और विदेशी मामले, देखेगी।

› तीसरा कदम: राज्य सरकारें 'बीटा', 'गामा', 'डेल्टा' अपने-अपने राज्यों के 'स्थानीय मामलों', जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य, पर कानून बनाएंगी और उन्हें लागू करेंगी।

› चौथा कदम: दोनों स्तर की सरकारें एक ही नागरिक समूह पर शासन करेंगी, लेकिन अपने-अपने अधिकार-क्षेत्र में स्वतंत्र होकर काम करेंगी।

उत्तर – इस तरह, 'अल्फा' में केंद्र और राज्य सरकारें अपनी-अपनी शक्तियों का प्रयोग करके, एक-दूसरे के अधिकार-क्षेत्र का सम्मान करते हुए, देश का शासन चलाएंगी। यह संघीय व्यवस्था है।

उदाहरण 2. मान लीजिए एक कानून बनाने का विषय "पुलिस" है और दूसरा विषय "शिक्षा" है। तय करो कि सामान्य तौर पर कानून बनाने का अधिकार किसके पास होगा—राज्य सरकार के पास, या केंद्र के साथ साझा (केंद्र और राज्य दोनों) के पास?

› पहचानो—विषय किस सूची में आता है: 'पुलिस' राज्य सूची से जुड़ा विषय माना जाता है।

› राज्य सूची के अनुसार: 'पुलिस' पर कानून बनाने का अधिकार सामान्य तौर पर सिर्फ राज्य सरकार के पास होगा।

› अब 'शिक्षा' देखो—यह समवर्ती सूची का उदाहरण है।

› समवर्ती सूची के अनुसार: शिक्षा पर कानून बनाने का अधिकार केंद्र और राज्य दोनों के पास होता है।

› यदि केंद्र और राज्य के कानून आपस में टकराएँ, तो सामान्य तौर पर केंद्र द्वारा बनाया कानून मान्य होता है।

उत्तर – 'पुलिस' पर कानून बनाने का अधिकार सामान्य तौर पर राज्य सरकार के पास है; 'शिक्षा' पर केंद्र और राज्य—दोनों के अधिकार (समवर्ती) होते हैं, और टकराव की स्थिति में केंद्र का कानून सामान्य तौर पर मान्य माना जाता है।

उदाहरण 3. एक संघीय देश में केंद्र और राज्य दोनों संविधान के तहत अपने-अपने अधिकार-क्षेत्र में काम करते हैं। लेकिन हर बार जब केंद्र को किसी मुद्दे में भूमिका चाहिए होती है, वह राज्य के अधिकार-क्षेत्र में हस्तक्षेप कर देता है और राज्य उसे बार-बार रोकता है। इससे अदालतों में विवाद बढ़ जाते हैं। इस स्थिति में संघीय व्यवस्था की कौन-सी कामकाजी शर्त कमजोर हो रही है?

- › देखो: अधिकार-क्षेत्र संविधान ने तय किया है—फिर भी हस्तक्षेप हो रहा है, यानी नियमों की मान्यता नहीं हो रही।
- › यह व्यवहार “सहमति” की कमी दिखाता है—स्तरों के बीच सत्ता-विभाजन के नियमों पर सहमत होकर चलना कमजोर है।
- › साथ ही राज्य और केंद्र का एक-दूसरे पर भरोसा भी टूटता है, क्योंकि हर कदम को देखल समझा जा रहा है।
- › इसलिए मुख्य समस्या सहमति है और भरोसा भी प्रभावित हो रहा है।

उत्तर – मुख्य रूप से सत्ता-विभाजन के नियमों पर सहमति कमजोर हो रही है; साथ में एक-दूसरे पर भरोसा भी टूट रहा है।

उदाहरण 4. एक देश में पहले से अलग-अलग स्वतंत्र राज्य नहीं थे, बल्कि एक बड़े देश ने अपनी अंदरूनी विविधता के आधार पर नए राज्यों का गठन किया और फिर केंद्र तथा राज्यों के बीच सत्ता का बँटवारा किया। यह संघीय गठन का कौन-सा तरीका है?

- › पहचानो: पहले ‘मिलकर’ संघ बना या ‘बनाकर’ राज्यों को तैयार किया गया।
- › दिए गए केस में पहले अलग स्वतंत्र देश/राज्य मिलकर नहीं आए।
- › दिए गए केस में बड़े देश ने अपने अंदर की विविधता के अनुसार राज्य बनाए और फिर सत्ता बाँटी।
- › इसलिए यह दूसरा तरीका है।

उत्तर – यह संघीय गठन का दूसरा तरीका है—बड़े देश में विविधता के अनुसार राज्यों का गठन करके केंद्र-राज्य के बीच सत्ता का बँटवारा करना।

उदाहरण 5. मान लीजिए केंद्र सरकार ने पूरे देश के लिए शिक्षा पर एक नया कानून बनाया है, और पंजाब राज्य ने भी शिक्षा पर एक अलग कानून बना रखा है। अगर इन दोनों कानूनों में कुछ बातें एक-दूसरे से मेल नहीं खातीं, तो कौन सा कानून लागू होगा?

- › पहला कदम: सबसे पहले यह पहचानो कि ‘शिक्षा’ किस सूची का विषय है। हमें पता है कि शिक्षा ‘समवर्ती सूची’ (Concurrent List) में आती है।
- › दूसरा कदम: अब यह याद करो कि ‘समवर्ती सूची’ के विषयों पर अगर केंद्र और राज्य के कानूनों में टकराव होता है, तो किसका कानून मान्य होता है।
- › तीसरा कदम: संविधान के नियम के अनुसार, ऐसे मामलों में ‘केंद्र सरकार’ द्वारा बनाया गया कानून ही मान्य होगा।

उत्तर – इस स्थिति में, केंद्र सरकार द्वारा बनाया गया शिक्षा कानून ही पंजाब राज्य में लागू होगा, क्योंकि समवर्ती सूची के मामलों में केंद्र का कानून ही अंतिम माना जाता है।

उदाहरण 6. मान लो राज्य सरकार कहती है कि किसी नए कानून का अधिकार सिर्फ राज्य के पास होना चाहिए, लेकिन केंद्र कहता है कि वह विषय उसकी सूची में आता है। साथ ही एक मुद्दा है कि यह अधिकार-क्षेत्र बदला कैसे जाएगा—क्या कोई एक स्तर अपने दम पर नियम बदल सकता है? और अगर विवाद हो जाए तो फैसला कौन करेगा?

- › पहचानो कि संघीय व्यवस्था में अलग-अलग स्तरों के अपने अधिकार-क्षेत्र संविधान द्वारा तय होते हैं; इसलिए दोनों दावे ‘संविधान/सूचियों’ से जाँचने होंगे।
- › देखो कि मौलिक संवैधानिक प्रावधानों में बदलाव किसी एक स्तर की सरकार अकेले नहीं कर सकती; दोनों स्तरों की सहमति चाहिए।
- › विवाद की स्थिति में अदालतें संविधान और अलग-अलग स्तरों के अधिकारों की व्याख्या करती हैं।
- › यदि अधिकारों के विवाद में निर्णायक भूमिका चाहिए, तो सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय निर्णायक माना जाता है।

उत्तर – संविधान के अनुसार अधिकार-क्षेत्र तय होंगे; मौलिक बदलाव कोई एक स्तर अकेले नहीं कर सकता (सहमति जरूरी), और अधिकार-क्षेत्र के विवाद पर अदालतें व्याख्या करेंगी—अंतिम निर्णायक भूमिका सर्वोच्च न्यायालय की होती है।

उदाहरण 7. मान लो केंद्र में एक गठबंधन की सरकार है और कुछ राज्य उसी गठबंधन के समर्थक हैं। (1) इस स्थिति में केंद्र-राज्य संबंधों पर स्वायत्तता और सहयोग का असर किस तरह हो सकता है? (2) अगर उसी समय कई राज्य विपक्षी गठबंधन के हों और फैसलों में लगातार टकराव हो, तो संघीय भावना कैसे कमजोर हो सकती है?

- › केंद्र-राज्य संबंधों में समय के साथ बदलाव को समझो: शासन दल/गठबंधन/बहुमत का असर रिश्तों पर पड़ता है।
- › (1) समर्थक राज्यों में सहयोगी माहौल बनने पर: केंद्र नीतियाँ जल्दी लागू करा पाता है, राज्य भी भरोसे से अपने स्तर पर काम कर पाते हैं—सहयोग बढ़ता है।
- › (1) जब सहयोग बढ़ता है, तो राज्य अपने अधिकार-क्षेत्र में सक्रिय रहते हैं—स्वायत्तता का उपयोग प्रभावी हो जाता है।
- › (2) विपक्षी राज्यों में टकराव बढ़ने पर: केंद्र और राज्य के बीच समन्वय घटता है, विवाद बढ़ते हैं—सहयोग की संस्कृति कमजोर पड़ती है।
- › (2) अगर विवाद बढ़कर 'केंद्र का दबाव' जैसा व्यवहार बन जाए, तो राज्य की स्वायत्तता पर असर पड़ेगा—संघीय भावना कमजोर होगी।
- › अंतिम निष्कर्ष: संघीय भावना मजबूत तब होती है जब स्वायत्तता भी काम करे और सहयोग भी—राजनीतिक माहौल से दोनों प्रभावित होते हैं।

उत्तर – (1) समर्थक राज्यों में सहयोगी माहौल होने से केंद्र-राज्य संवाद आसान होता है, नीतियाँ जल्दी चलती हैं और राज्य अपने अधिकार-क्षेत्र में भरोसे के साथ काम करते हैं—स्वायत्तता का सही उपयोग और सहयोग दोनों बढ़ते हैं। (2) विपक्षी राज्यों में टकराव बढ़ने पर समन्वय घटता है, विवाद बढ़ते हैं, और अगर केंद्र का हस्तक्षेप/दबाव जैसा माहौल बने तो राज्य की स्वायत्तता कमजोर होकर संघीय भावना कमजोर हो सकती है।

उदाहरण 8. मान लो एक बड़े राज्य के दो इलाके हैं—इलाका A की मुख्य भाषा x है, इलाका B की मुख्य भाषा y है। दोनों इलाकों की संस्कृति अलग है और भौगोलिक रूप से भी वे अलग हैं (पहाड़/मैदान)। 1947-2019 की समझ के हिसाब से बताओ, पुनर्गठन करते समय किन-किन बातों को ध्यान में रखा जाएगा और सिर्फ 'भाषा' का फैसला क्यों पर्याप्त नहीं हो सकता?

- › पहले पहचानो—भाषा की वजह से प्रशासन आसान होगा और लोगों की सहभागिता बढ़ेगी (भाषायी आधार)।
- › फिर देखो—संस्कृति अलग है तो सामाजिक जुड़ाव और लोक-परंपरा के अनुसार प्रशासन बेहतर बन सकता है।
- › फिर जाँचो—भूगोल अलग है तो विकास, संचार और सेवा पहुँचाने की योजना अलग तरह से बनानी पड़ेगी।
- › अंत में मान लो—जातीय/एथनीसिटी विविधता भी हो सकती है, इसलिए 'एक ही तरह' का फैसला टकराव बढ़ा सकता है।
- › इसलिए निष्कर्ष: भाषा महत्वपूर्ण है, लेकिन संस्कृति, भूगोल और एथनीसिटी को जोड़कर संतुलित सीमाएँ/राज्य बनाए जाते हैं।

उत्तर – पुनर्गठन में भाषा (x बनाम y) के साथ-साथ संस्कृति, भूगोल और एथनीसिटी/जातीय विविधता को भी ध्यान में रखा जाएगा। सिर्फ भाषा पर्याप्त नहीं क्योंकि प्रशासन, विकास और सामाजिक मेल-जोल पर संस्कृति-भूगोल और विविधता का भी असर होता है। संतुलित फैसला भरोसा और समावेशन बढ़ाता है।

उदाहरण 9. अगर किसी राज्य में सरकारी कामकाज के लिए हिंदी के साथ अंग्रेजी का इस्तेमाल भी हो रहा है, तो बताओ कि भाषा-नीति के संदर्भ में यह बात क्यों विवाद/चर्चा पैदा कर सकती है—और फिर भी संघवाद के मूल सिद्धांत से इसका संतुलन कैसे समझेंगे?

- › पहले समझो: संविधान ने किसी एक भाषा को 'एकमात्र राष्ट्रभाषा' नहीं बनाया—यानी व्यवस्था बहु-भाषाई सम्मान के लिए बनाई गई है।
- › फिर याद रखो: हिंदी को राजभाषा का स्थान है, पर बाकी भाषाओं को (अनुसूचित भाषाओं सहित) पहचान और विकास का अधिकार मिलता है।
- › अब अंग्रेजी के उपयोग पर ध्यान दो: सरकारी कामकाज में तकनीकी/व्यावहारिक कारणों से अंग्रेजी उपयोग में आ सकती है—इससे काम रुकता नहीं।
- › विवाद क्यों: कुछ लोग मानते हैं कि अंग्रेजी का उपयोग जरूरत से ज्यादा बढ़ रहा है, जिससे हिंदी/अन्य भाषाओं की भूमिका घट सकती है।
- › संतुलन कैसे: संघवाद में केंद्र और राज्य अपनी जरूरतों के हिसाब से काम चलाते हैं, लेकिन संवैधानिक भावना (भाषाई सम्मान + विकास) के साथ लचीलापन रखना होता है।

उत्तर – अंग्रेजी का व्यावहारिक उपयोग कामकाज सुगम बनाता है, लेकिन यह चर्चा इसलिए बनती है क्योंकि संविधान की बहु-भाषाई भावना के तहत किसी भी भाषा की भूमिका को सीमित/कम नहीं किया जाना चाहिए। इसलिए केंद्र/राज्य के बीच लचीलापन रहते हुए हिंदी और अनुसूचित भाषाओं के सम्मान व विकास को साथ बनाए रखने का संतुलन भाषा-नीति का लक्ष्य है।

उदाहरण 10. अगर केंद्र/राज्य को सब फैसले करने पड़ें, तो स्कूल-शौचालय की जरूरत वाले एक गाँव में निर्णय की देरी और खर्च के गलत उपयोग का जोखिम कैसे बढ़ता है? और विकेंद्रीकरण इसमें कैसे सुधार लाता है?

- › पहले सोचो: स्थानीय समस्या की जानकारी (कहाँ कमी है, कब जरूरत है) सबसे ज्यादा गाँव में होगी।
- › अगर अधिकार ऊपर रहेंगे, तो जानकारी की पुष्टि और फाइल-प्रक्रिया में देरी होगी।
- › देरी बढ़ेगी तो काम का समय/बजट भी गड़बड़ा सकता है, और पैसा ऐसे उपयोग हो सकता है जहाँ सबसे ज्यादा जरूरत नहीं थी।
- › विकेंद्रीकरण में केंद्र/राज्य से शक्तियाँ स्थानीय निकाय तक जाती हैं।
- › स्थानीय निकाय लोगों के साथ मिलकर जरूरत की सही प्राथमिकता तय करता है और संसाधन कुशलता से इस्तेमाल करता है।
- › चुनाव और भागीदारी की वजह से जवाबदेही भी बढ़ती है, इसलिए गलत खर्च का जोखिम कम होता है।

उत्तर – केंद्र/राज्य पर सारे फैसले होने से स्थानीय जानकारी देर से पहुँचती है, प्राथमिकताएँ गलत हो सकती हैं और खर्च/योजना में देरी व अक्षमता का जोखिम बढ़ता है। विकेंद्रीकरण में अधिकार स्थानीय निकाय को मिलने से जरूरत की सही समझ के साथ तेजी से निर्णय होते हैं, संसाधन कुशल उपयोग होते हैं और लोगों की प्रत्यक्ष भागीदारी से जवाबदेही बढ़ती है।

उदाहरण 11. मान लो किसी नगर पालिका में कुल 30 वार्ड हैं। आरक्षण और महिला आरक्षण की व्यवस्था लागू होने पर बताइए: (1) महिलाओं के लिए न्यूनतम कितने पद/सीटें आरक्षित होंगी, और (2) क्या यह व्यवस्था 'स्थानीय चुनाव नियमित' और 'स्वतंत्र चुनाव आयोग' वाली जरूरत को पूरा करने में मदद करती है?

- › महिला आरक्षण का नियम देखें: कम-से-कम एक तिहाई पद महिलाओं के लिए आरक्षित
- › कुल 30 में $1/3 = 30 \div 3 = 10$
- › इसका मतलब महिलाओं के लिए न्यूनतम 10 सीटें आरक्षित (कम नहीं) होंगी
- › आरक्षण और महिला आरक्षण प्रतिनिधित्व बढ़ाते हैं, और साथ में चुनाव नियमित + राज्य चुनाव आयोग जैसी स्वतंत्र संस्था निष्पक्षता देती है—इससे स्थानीय निकायों पर भरोसा और भागीदारी मजबूत होती है

उत्तर – महिलाओं के लिए न्यूनतम 10 सीटें आरक्षित होंगी। और हाँ—यह व्यवस्था स्थानीय चुनाव नियमित कराने व राज्य चुनाव आयोग जैसी स्वतंत्र प्रक्रिया के साथ मिलकर स्थानीय शासन को ज्यादा भरोसेमंद और प्रभावी बनाने में मदद करती है।

उदाहरण 12. एक जिले में गांवों की सड़क मरम्मत का काम सिर्फ एक ग्राम पंचायत नहीं कर पा रही। उसे योजना बनाकर आगे कैसे बढ़ाना चाहिए—ग्रामीण स्थानीय शासन के ढाँचे को क्रम में रखकर बताओ।

- › पहले ग्राम पंचायत/ग्राम सभा स्तर पर जरूरत का प्रस्ताव और स्थानीय समस्या की पहचान होती है।
- › क्योंकि कई गांवों/पड़ोसी इलाकों का हिस्सा जुड़ा है, इसलिए समन्वय पंचायत समिति के स्तर पर होता है।
- › पानी/फंड/बड़े प्रशासनिक निर्णयों के लिए जिला परिषद जिला-स्तर की योजना, संसाधन और निगरानी के जरिए मदद करती है।
- › इस तरह काम ऊपर के स्तरों तक योजना-और-संसाधन के साथ पहुंचता है।

उत्तर – गांव की जरूरत ग्राम पंचायत/ग्राम सभा प्रस्ताव/पहचान पंचायत समिति समन्वय/योजना जिला परिषद संसाधन/निगरानी के साथ आगे बढ़ाना।

उदाहरण 13. मान लो एक शहर में 100 करोड़ का बजट है। अगर निर्णय सिर्फ ऊपर से हो, तो 60 करोड़ सिर्फ बड़े/अमीर इलाकों को मिल जाते हैं। अगर नागरिक भागीदारी वाली प्रक्रिया हो और अलग-अलग उप-क्षेत्रों की जरूरतें सुनी जाएँ, तो एक लक्ष्य बनता है कि अमीर और गरीब इलाकों में वितरण अधिक बराबर हो। अगर नागरिकों की भागीदारी से अमीर इलाकों को 40 करोड़ और बाकी इलाकों को 60 करोड़ मिलते हैं, तो बताओ—कौन-सी नीति-शिक्षा (concept learning) यहाँ दिख रही है?

- › पहले पहचानो कि यह 'बजट-निर्णय' की स्थिति है: 100 करोड़ को किस हिस्से में बांटा गया
- › अब तुलना करो: नागरिक भागीदारी से अमीर इलाकों का हिस्सा 60 से घटकर 40 हुआ
- › बाकी इलाकों को 60 मिला, यानी वंचित जरूरत वाले क्षेत्रों को प्राथमिकता बढ़ी
- › इससे निष्कर्ष निकालो कि नागरिक सहभागिता से संसाधन-वितरण में समानता (केवल अमीर बस्तियों तक सीमित न रहना) बेहतर हो सकती है

उत्तर – यह उदाहरण दिखाता है कि नागरिक सहभागिता से बजट-निर्णय ज़रूरतों के हिसाब से होने लगता है, और संसाधन-वितरण में समानता बढ़ती है—सिर्फ अमीर इलाकों तक सीमित नहीं रहता।

बोर्ड परीक्षा के लिए खास

- संघवाद और एकात्मक शासन के बीच के अंतर को उदाहरणों के साथ अच्छी तरह समझ लेना, यह अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में पूछा जाता है।
- उत्तर लिखते समय 'अधीन आदेश नहीं' और 'अधिकार-क्षेत्र' शब्द जरूर इस्तेमाल करो।
- आंसर में लिखो: 'कामकाजी शर्तें-सहमति और भरोसा (आदर्श में आपसी भरोसा + साथ रहने पर सहमति)'।
- दो तरीकों के नाम और उदाहरण (USA/Switzerland/Australia बनाम India/Belgium/Spain) याद रखो।
- यह 'केंद्र-राज्य सत्ता-विभाजन' का टॉपिक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। तीनों सूचियों के कम से कम दो-दो उदाहरण हमेशा याद रखना और 'अवशिष्ट विषयों' और 'समवर्ती सूची में टकराव' के नियम को अच्छे से समझना। अक्सर इस पर सीधे सवाल आते हैं।
- उत्तर लिखते समय 6 विशेषताएँ अलग-अलग हेडिंग में जरूर लिखो—यही सीधा मार्क्स देता है।
- उत्तर में 'शासन दल/गठबंधन/बहुमत' के कारण बदलाव जरूर लिखना।
- बोर्ड/टेस्ट में 2 लाइन लिखो: 'भाषायी आधार + संतुलन (संस्कृति, भूगोल, विविधता)'।
- NCERT में 'राजभाषा बनाम एकमात्र राष्ट्रभाषा' और 'अनुसूचति भाषाएँ' का फर्क लिखकर सीधे मार्क्स मिलते हैं।
- उत्तर में लिखो: "शक्तियों का हस्तांतरण" + "स्थानीय समस्याओं का बेहतर समाधान" + "प्रत्यक्ष भागीदारी"।
- बोर्ड में 'वास्तविक विकेंद्रीकरण' के 5 बिंदु जरूर लिखिए: चुनाव नियमित, आरक्षण, महिला 1/3, SEC, अधिकार+राजस्व।
- उत्तर में ग्रामीण और शहरी दोनों स्तरों के नाम क्रम से लिखो।
- NCERT में पूछे जाने पर लिखो: 'नागरिक सहभागिता से बजट-निर्णय; संसाधन-वितरण में समानता'।

एक नज़र में रिवीज़न

- › संघवाद: केंद्र और राज्य में सत्ता का बंटवारा, दो स्तरों की स्वतंत्र सरकारें।
- › - संघीय: केंद्र+राज्य, अलग अधिकार; एकात्मक: केंद्र आदेश
- › दो शर्तें: सहमति + भरोसा
- › मिलकर बनें—पहला; विविधता से बने—दूसरा।
- › विधायी अधिकार 3 सूचियों में विभाजित: संघ, राज्य, समवर्ती; अवशिष्ट विषय केंद्र के पास।
- › स्तर-क्षेत्र-सुरक्षा-सहमति-अदालत-पैसा
- › - स्वायत्तता + सहयोग = मजबूत संघीय भावना

- › - भाषा जरूरी, साथ में संस्कृति-भूगोल-एथनीसिटी
- › हिंदी = राजभाषा; बाकी = अनुसूचित; अंग्रेजी पर संतुलन बहस।
- › - अधिकार नीचे, फैसले नज़दीक; चुनाव नियमित
- › - नियमित चुनाव, आरक्षण, 1/3 महिला, SEC, अधिकार+राजस्व
- › ग्राम-समिति-जिला; शहर-नगरपालिका/नगर निगम।
- › - People in budget जरूरतों के हिसाब से समान वितरण